असमीया भाषा

निश्चित रूप से यह कहा नहीं जा सकता कि असमीया भाषा का वास्तविक प्रारंभिक काल कब से है। इस पर काफी खोज होती रही है। यहाँ हम सर्वप्रथम असमीया भाषा के संबंध में कतिपय विद्वानों का मत उद्धृत करेंगे।

ईस्वी सन् सातवीं के भ्रमणकारी ह्वेनचाङ्ग का विचार था— ''मध्यभारत की भाषा और प्राचीन कामरूपी में थोड़ा भेद है.....।''

डॉ० ग्रियर्सन का कथन है—''मगध के पूर्व में गौड़ या प्राच्य अपभ्रंश भाषा थी—जिसका केन्द्र आधुनिक मालदह जिले का गौड़ था। यह दक्षिण और दक्षिण-पूर्व की ओर फैली और यहाँ आधुनिक बंगला की जननी बनी। दक्षिण की ओर बढ़ने के अलावा गौड़ अपभ्रंश गंगा के उत्तर में पूर्व की ओर भी बढ़ी और इन दिनों इसका प्रतिनिधित्व उत्तर बंगाल और असम राज्य में असमीया कर रही है। उत्तरी बंगाल और असम की भाषाएँ खास बंगाल से नहीं, बल्कि सीधे पश्चिम से आयीं। मागधी अपभ्रंश वास्तव में पूर्व और दक्षिण की ओर तीन दिशाओं में फैल गयी—ऐसा माना जा सकता है। उत्तर-पूर्व में उत्तर बंगाल की भाषा और असमीया के रूप में, दक्षिण में उड़िया के रूप में; और इन दोनों के बीच बंगला के रूप में इसका विकास हुआ है।''

डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी और डॉ० वाणीकांत काकति ने असमीया भाषा के स्वतंत्र रूप को पूर्ण निश्चित कर दिया है। डॉ० चटर्जी कहते हैं—''उत्तरी बंगाल और असम में प्रचलित एक ही बोली 'बंगला-असमीया' बोली-समूह की एक शाखा के रूप में चलती रही। 15वीं सदी में इसकी दो शाखाएँ बन गयीं—असमीया और उत्तरी-बंगला।''

इन पंडितों के तथ्यों से यह साबित होता है कि असमीया भाषा की विस्तृति 14वीं सदी तक व्यापक थी। 15वीं सदी के बाद भी उत्तरी बंगाल की बोली असमीया ही रही और पढ़ाई-लिखाई की भाषा ही केवल बंगला बनी। स्वतंत्रता के बाद असमीया भाषा-संस्कृति-सभ्यता का यह केन्द्र कोचबिहार को पश्चिम बंगाल में मिला दिया गया और इस प्रकार उस अंचल से असमीया भाषा को सम्पूर्ण रूप से निर्वासित कर दिया गया।

संस्कृत आर्य भाषा से आदि प्राकृत, मध्य प्राकृत तथा अन्त्य प्राकृत या अपभ्रंश भाषा का जन्म हुआ। उन्हीं से फिर महाराष्ट्री, शौरसेनी, मागधी और अर्ध-मागधी का जन्म हुआ। ध्वनि और शब्द-रूप बदलते-बदलते मध्ययुग में आकर

इनका रूप संस्कार हुआ है। उन्हीं प्राकृतों से आगे चलकर अपभ्रंशों का जन्म हुआ। मागधी अपभ्रंश से ही फिर असमीया आदि पूर्वीय-प्रादेशिक भाषाओं का जन्म हुआ। एक उदाहरण लीजिये—

''पिय संगमि कउ निद्दड़ी केम्म
मइ बिन्नि बि बिन्न सिया निद्द
न एम्व न तेम्व।''

(प्रिय के संग नींद कैसे हो सकती है और प्रिय के विहीन भी नींद कैसे सम्भव। इस तरह भी नहीं होता, उस तरह भी नहीं होता।)

इन्हीं पदों से ही असमीया भाषा के आगमन की सूचना हमें मिल जाती है। फिर सप्तम शताब्दी से दशम शताब्दी के भीतर के ताम्रलेख, शिलालेख और दान-पत्रों द्वारा असमीया भाषा का अपना रूप सामने आने लगा था। ह्वेनचांग के विवरण से हमें यह तो पता चल ही जाता है कि असमीया भाषा ने उसी समय कुछ अपना रूप ले लिया था। असम के प्राचीन ताम्रलेख अथवा शिलालेखों की भाषा यद्यपि संस्कृत ही थी और कामरूप साम्राज्य की राज-भाषा भी संस्कृत ही थी— फ़िर भी गाँवों के नाम, नदियों के नाम, व्यक्ति के नाम आदि से यह ज्ञात हो जाता है कि कामरूप में उसी समय से ही कथित भाषा का विकास हो रहा था।

'बौद्ध गान व दोहा' और मीननाथ आदि के ग्रन्थों से ही हमें असमीया भाषा के आगमन की सूचना मिल जाती है— जिन्हें महापंडित राहुल सांकृत्यायन ने असमीया भाषा का आदि रूप बतलाया है।

नाथ बौद्ध साहित्य की ध्वनिगत और व्याकरणगत समानता अन्यान्य भाषाओं से अधिक असमीया से है। डॉ० काकति ने इसे वैज्ञानिक पद्धति से सिद्ध कर दिखाया है।

असमीया भाषा के गठन के सम्बन्ध में हेम बरुवा ने लिखा है—''असमीया भाषा सामासिक है, जिसमें भारतीय आर्य और भारत-चीनी उद्गमों के शब्दों ने जगह बना ली है। इसके अतिरिक्त केवल उधार लिये शब्दों में ही नहीं बल्कि व्याकरण, कारक प्रक्रिया और उच्चारण में भी अन्य भारतीय आर्य-पूर्व और अनार्य प्रभाव देखे जाते हैं।''

उस प्रकार असमीया भाषा के गठन में आस्ट्रिक गोष्ठी का खासी-मनख्मेर (जयंतीया)— जिन्हें यहाँ के प्राचीनतम आदिवासी माना जाता है-तिब्बत-बर्मी शाखा से उद्भूत बड़ो-कछाड़ी आदि भाषा के अलेख शब्द और ध्वनि असमीया भाषा में आयीं—जिसके कारण असमीया भाषा का रूप अन्यान्य भारतीय भाषाओं से भिन्न दिखाई देने लगा।

असम के प्रसिद्ध पंडित स्व. कालिराम मेधि ने यह भी सिद्ध किया है कि असमीया भाषा में ऐसे अनेक शब्द प्रचलित हैं जो वैदिक और प्राक्-वैदिक काल के हैं। उस प्रकार के शब्द आवेस्ता ग्रन्थ में ही केवल दिखाई पड़ते हैं। इसका कारण दिखाते हुए उन्होंने बताया कि आर्यों का एक दल हिमालय प्रान्त से आते-आते कामरूप पहुँचा था और वह भारत में आये आर्यों के प्रथम दल का ही अंग था। इन्होंने अपना राज्य भी इधर पहाड़ी हिस्सों में कायम किया था। इस बात की पुष्टि असम के प्रसिद्ध प्रत्नतात्त्विक स्व. राजमोहन नाथ के कथन से भी होती है। उन्होंने असमीया भाषा के उच्चारण के सम्बन्ध में यह सिद्ध कर दिखाया था कि असमीया ध्वनियों का उच्चारण प्राक-वैदिक है। उदाहरण स्वरूप उन्होंने प्राक-वैदिक शब्द 'अहुर' को आर्यों ने कैसे 'असुर' बना लिया, बताया है। इससे हमें यह ज्ञात हो जाता है कि आर्यों के प्रथम दल के यहाँ बस जाने के बहुत काल बाद ही दूसरा आर्य दल यहाँ आया। वास्तव में बाद को आये आर्यों के दल ने बिहार और उत्तर प्रदेश आदि अंचलों से आकर यहाँ प्रवेश किया था। पं० मेधिजी ने असम के कलिताओं को प्रथम दल का आर्य बताया है—जिन्होंने असमीया भाषा को एक अनोखा शब्द-भंडार तथा विलक्षण उच्चारण का रूप प्रदान किया।

इस प्रकार असमीया भाषा के गठन में आर्य, खासी-मनख्मेर, कोल, मालय, तिब्बत-बर्मी (अका, डफला, मिरि, मिसिमि, आबर तथा बड़ो), फिर शान यानी आहोम भाषा का अवदान है। इसी कारण से डॉ० चटर्जी असमीया भाषा को पूर्ण रूप से आर्य की शाखा मानना नहीं चाहते थे। डॉ० वाणीकांत काकति का कथन है— "असमीया शब्द-भंडार का आवश्यक आधार आस्ट्रिक तत्त्वों से बना प्रतीत होता है। आज की असमीया भाषा में जिन शब्दों या पदों को देशज माना जाता है उनमें से अधिकांश आस्ट्रिक मूल से लिये गये प्रतीत होते हैं।"

फिर भगदत्त आदि किराताधिपतियों का जो विशाल साम्राज्य था, उससे भी अनेक शब्द असमीया में आ सकते हैं। नेपाली आदि हिमालयी प्रान्त की भाषाओं के अनेक देशज शब्द असमीया में ज्यों के त्यों पाये जाते हैं। ये शब्द उसी समय असमीया कथ्य भाषा में आ गये प्रतीत होते हैं। भगदत्त की राजधानी स्थित सेना वाहिनी भी भिन्न-भिन्न किरात जातीय लोगों से बनी थी। उन सैनिकों से भी अनेक विलक्षण शब्द असमीया भाषा में आना संभव है।

असम पूर्वकाल से ही प्रकृति-प्रधान देश रहा है। यहाँ के जन-जीवन का सम्बन्ध नदी-पर्वत आदि के साथ ही रहा है। प्रकृति उसके जीवन में कभी आशीर्वाद बनकर आती है तो कभी अभिशाप। यहाँ सघन भूचाल होता है, बाढ़ आती है। इन्हीं

कारणों से यहाँ बड़ी-बड़ी इतिहास प्रसिद्ध इमारतें बनी नहीं—बनी भी हैं तो रही नहीं। भौगोलिक दृष्टि से यह भूमिभाग शेष भारत के साथ असम्बन्धित था। फिर यहाँ का मौसम भी नम था। इन सबका प्रभाव भी असमीया भाषा में पड़ना स्वाभाविक था। भाषा-विज्ञान के इस तत्त्व का पूरा प्रभाव असमीया भाषा के उच्चारण में दिखाई पड़ता है। संस्कृत के कठिन शब्दों का या ध्वनियों का उच्चारण यहाँ अपने अनुकूल कोमल बना लिया गया है।

भारत के राष्ट्रीय संविधान ने सन् 1950 ई. में असमीया को राष्ट्रीय-भाषा का सम्मान प्रदान किया है। फिर सन् 1960 ई. की 28 अक्टूबर को असम विधान सभा ने इसे राज्य-भाषा के रूप में घोषित किया। असम की कुल आबादी के करीब 70 प्रतिशत लोग असमीया भाषी हैं। फिर नागाभूमि की सरकार ने 'नागामीज' नाम से इस भाषा को राष्ट्रीय मर्यादा प्रदान की है। उत्तरी-पूर्वी सीमांचल और नागा पहाड़ की आम जनता का माध्यम असमीया है। अरुणाचल के स्कूलों का माध्यम भी असमीया थी। कार्बी (मिकिर), डिमाछा-कछाड़ी और गारो जनजातियों का भी व्यावसायिक और कहीं-कहीं शैक्षणिक माध्यम भी असमीया है।

अंग्रेजों के आगमन के पश्चात् इस भाषा को नये-नये शब्द, शैली और साहित्य-संभार मिले—जिससे असमीया भाषा का विकास दिनोदिन अधिकाधिक होता जा रहा है।